Pyare Nabi Ki Muaaf Kar Dene Ki Aadat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 289
Weekly Booklet : 289

(सिल्सिला अख़्लाक़े नबवी, क़िस्त : 1)

प्यारे नबी صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم

की मुआफ़ कर देने की आदत

सफ़हात 20

- ज़िन्दगी का सब से सख़्त दिन 05
- जान के दुश्मन को मुआफ़ी 08
- शरई हुदूद तोड़ने पर हुज़ूर का जलाल 11
- तौरात में हुज़ूर की निशानियां 13

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **प्यारे नबी** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **की मुआ़फ़ कर देने की आ़दत**

सिने त़बाअ़त : शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म **1444** हि., मार्च **2023** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**प्यारे नबी** صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **की मुआ़फ़ कर देने की आ़दत**" मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत़्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عَساکِرج ۵۱ص۱۳۸دارالفکربیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुआ़फ़ कर देने की आ़दत

दुआ़ए अ़त्तार : या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 18 सफ़ह़ात का रिसाला "प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुआ़फ़ कर देने की आ़दत" पढ़ या सुन ले उसे गुस्सा पीने वाला और दूसरों की ग़लतियां मुआ़फ़ करने वाला बना और उसे बे ह़िसाब बख़्श दे । اٰمين بِجاهِ خاتَمِ النّبِيّين صلى الله عليه واله وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारी दुआ़ओं का मुह़ाफ़िज़, रब तआ़ला की रिज़ा का बाइ़स और तुम्हारे आ'माल की पाकीज़गी का सबब है ।"

(القول البديع، ص270)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

लोगों में बेहतर वोह है जो....

उम्मुल मोमिनीन, ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا से रिवायत है कि एक बार नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी आ'राबी से एक वस्क़ (छे मन तीस (30) सेर) खजूरों के बदले में एक ऊंट ख़रीदा, खजूरें देने के लिए जब आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم घर तशरीफ़ लाए और खजूरें तलाश कीं तो न मिलीं । आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस आ'राबी के पास

www.dawateislami.net

वापस गए और इर्शाद फ़रमाया : अ़ब्दुल्लाह ! हम ने तुझ से एक वस्क़ खजूरों के बदले ऊंट ख़रीदा था, (घर में खजूरें मौजूद थीं) मगर तलाश के बा वुजूद हमें खजूरें नहीं मिल सकीं। येह सुनते ही वोह आ'राबी ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा : हाए धोका ! हाए धोका ! शम्ए़ रिसालत के परवाने, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने जब येह माजरा देखा तो आ'राबी को मारने के लिये दौड़े और उस से कहा : तू रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में ऐसी बात करता है ? नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इसे छोड़ दो ! क्यूं कि ह़क़दार को गुफ़्तगू का ह़क़ ह़ासिल होता है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दो तीन मरतबा इस त़रह़ फ़रमाया, लेकिन समझाने के बा वुजूद जब वोह न माना तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक सह़ाबी को हुक्म दिया कि ख़ौला बिन्ते ह़कीम के पास जा कर इन से कहो कि अगर आप के पास खजूरों का एक वस्क़ है तो हमें दे दें, اِنْ شَآءَ الله हम वापस कर देंगे। वोह सह़ाबी ह़ज़रते ख़ौला बिन्ते ह़कीम رَضِیَ اللهُ عَنْهَا के पास गए और उन से कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि अगर आप के पास एक वस्क़ खजूरें मौजूद हैं तो दे दें, اِنْ شَآءَ الله आप को वापस मिल जाएंगी। इन्हों ने कहा : मेरे पास खजूरें मौजूद हैं, आप लेने के लिये किसी को भेज दीजिये। सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस आ'राबी को ले जाओ और जितनी खजूरें इस की बनती हैं दे दो। वोह आ'राबी जब खजूरें ले कर वापस आया तो नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के दरमियान जलवा गर थे। उस ने अ़र्ज़ की : جَزَاكَ اللهُ خَيْرًا (यानी **अल्लाह** पाक आप को जज़ाए ख़ैर दे) आप ने पूरा ह़िस्सा बड़े उ़म्दा त़रीक़े से अ़त़ा

फ़रमा दिया। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : लोगों में से बेहतरीन वोह हैं जो उ़म्दा त़रीक़े से पूरा ह़िस्सा देते हैं।

(مسند امام احمد، 10/134، حدیث:36372ملتقطاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक ने अपने प्यारे और सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते पाक में तमाम अख़्लाक़ी अच्छाइयां और ख़ूबियां जम्अ़ फ़रमा दी हैं। आप के आ'ला अख़्लाक़ में से एक ख़ुल्क़ अ़फ़्वो दर गुज़र भी है, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी ज़ात के लिये कभी भी किसी से बदला नहीं लेते थे, बिलफ़र्ज़ अगर कोई आप के साथ बुरे सुलूक से पेश आता तो आप उस पर ग़ुस्सा करने या सख़्ती से पेश आने के बजाए शफ़्क़तो मेहरबानी वाला सुलूक ही फ़रमाते जैसा कि बयान कर्दा इस ख़ूब सूरत वाक़िए़ से इस का ब ख़ूबी अन्दाज़ा होता है कि सब के सामने सौदे से इन्कार करने का इल्ज़ाम लगाने वाले को आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ुदरत व त़ाक़त के बा वुजूद मुआ़फ़ फ़रमा दिया।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें भी इस बेहतरीन आ़दत को अपनाना चाहिए और ख़रीदो फ़रोख़्त करते वक़्त अगर गाहक दुकानदार को या दुकानदार गाहक को कोई तक्लीफ़ देह बात कह दे तो फ़ौरन ग़ुस्सा करने, बद कलामी करने और इल्ज़ाम तराशी करने के बजाए नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते त़य्यिबा पर अ़मल करते हुवे सब्र, नर्मी, बुर्दबारी और अ़फ़्वो दरगुज़र का मुज़ाहरा करना चाहिए क्यूं कि ग़ुस्से को पीना और लोगों से दर गुज़र करना ऐसा बेहतरीन अ़मल है कि जिस के

सबब हमारा शुमार **अल्लाह** पाक के पसन्दीदा बन्दों में हो जाता है, चुनान्चे, **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है :

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳۴﴾

(پ4، آل عمران:134)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और गुस्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले और नेक लोग **अल्लाह** के मह़बूब हैं।

इसी त़रह़ एक और मक़ाम पर इर्शाद होता है :

وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۲﴾

(پ18، النور:22)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और चाहिये कि मुआ़फ़ करें और दर गुज़रें क्या तुम इसे दोस्त नहीं रखते कि **अल्लाह** तुम्हारी बख़्शिश करे और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम में सब से ज़ियादा त़ाक़तवर वोह है जो गुस्से के वक़्त ख़ुद पर क़ाबू पा ले और सब से ज़ियादा बुर्दबार वोह है जो त़ाक़त के बा वुजूद मुआ़फ़ कर दे।

(کنز العمال، جزء3، 3/207، حدیث:7694)

ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ कहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : ऐ उ़क़्बा बिन आ़मिर ! जो तुम से क़त़ए तअ़ल्लुक़ी करे तुम उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ो, जो तुम्हें मह़रूम करे उसे अ़त़ा करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ करो।

(مسند احمد، 6/148، حدیث:17457)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ज़िन्दगी का सब से सख़्त दिन

एक मरतबा उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا ने नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया : क्या जंगे उहुद के दिन से भी ज़ियादा सख़्त कोई दिन आप पर आया है ? तो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : हां ! ऐ आ़इशा ! वोह दिन मेरे लिए जंगे उहुद के दिन से भी ज़ियादा सख़्त था, जब मैं ने ताइफ़ में वहां के एक सरदार "इब्ने अ़ब्दे यालील" को इस्लाम की दा'वत दी। उस ने मेरी दा'वत को रद कर दिया और ताइफ़ वालों ने मुझ पर पथ्थर बरसाए। मैं इसी ग़म में सर झुकाए चलता रहा, यहां तक कि मक़ामे "क़र्नुस्सआ़लिब" में पहुंचा। वहां पहुंच कर जब मैं ने सर उठाया तो क्या देखता हूं कि एक बादल मुझ पर साया किये हुवे है, उस बादल में से जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने मुझे आवाज़ दी और कहा कि **अल्लाह** पाक ने आप की क़ौम का क़ौल और उन का जवाब सुन लिया और अब आप की ख़िदमत में पहाड़ों का फ़िरिश्ता हाज़िर है ताकि वोह आप के हुक्म की ता'मील करे। प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि पहाड़ों के फ़िरिश्ते ने मुझे सलाम कर के अ़र्ज़ की : ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अगर आप चाहते हैं कि मैं "अख़्शबैन" (अबू क़ुबैस और क़ुऐक़आ़न) दोनों पहाड़ों को इन कुफ़्फ़ार पर उलट दूं तो मैं उलट देता हूं। येह सुन कर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : नहीं, बल्कि मैं उम्मीद करता हूं कि **अल्लाह** पाक इन की नस्लों से अपने ऐसे बन्दों को पैदा फ़रमाएगा, जो सिर्फ़ उसी की इ़बादत करेंगे और शिर्क नहीं करेंगे।

(بخاری،2/386،حدیث:3231 ملتقطاً،نزہۃ القاری،4/316ماخوذاً)

जाओ ! तुम सब आज़ाद हो

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यूं तो नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सारी ही ज़िन्दगी इसी त़रह़ ह़िल्मो करम के अ़ज़ीमुश्शान वाक़िआ़त से सजी हुई है, मगर फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर आप ने जिस अ़फ़्वो दर गुज़र और शफ़्क़त व मेहरबानी का मुज़ाहरा फ़रमाया, इस की मिसाल ना मुम्किन है, चुनान्चे

जब नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर जम्अ़ होने वाले हज़ारों) कुफ़्फ़ार पर एक गहरी निगाह डाली तो देखा कि वोह लोग डरे और सहमे हुऐ सर झुकाए, निगाहें नीची किये खड़े थे। उन ज़ालिमों में वोह लोग भी थे जिन्हों ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रास्तों में कांटे बिछाए थे, जो आप पर पथ्थरों की बारिश कर चुके थे और जिन्हों ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को مَعَاذَ الله शहीद करने की हर मुम्किन कोशिश की। आज येह सब मुजरिम बन कर खड़े कांप रहे थे और अपने दिलों में येह सोच रहे थे कि अन्सारो मुहाजिरीन की फ़ौजें हमारे बच्चे बच्चे को ख़ाको ख़ून में मिला कर हमारी नस्लों को ख़त्म कर डालेंगी लेकिन इसी मायूसी और ना उम्मीदी की ख़त़रनाक फ़ज़ा में एक दम शहन्शाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निगाहे रह़मत उन लोगों की त़रफ़ मुतवज्जेह हुई और आप ने उन मुजरिमों से पूछा कि "बोलो ! तुम को कुछ मा'लूम है कि आज मैं तुम से क्या मुआ़मला करने वाला हूं ?" इस सुवाल से मुजरिमीन कांप उठे लेकिन जबीने रह़मत देख कर उम्मीद भरे लहजे में अ़र्ज़ की : اَخٌ كَرِيْمٌ وَّابْنُ اَخٍ كَرِيْمٍ आप करम वाले भाई और करम वाले बाप के बेटे हैं।" सब की नज़रें आप के रुख़े पुरनूर पर जमी हुई थीं और सब के कान

शहन्शाहे नुबुव्वत का फ़ैसला कुन जवाब सुनने के मुन्तज़िर थे कि एक दम फ़ातेहे मक्का ने अपने करीमाना लहजे में इर्शाद फ़रमाया : "आज तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं, जाओ तुम सब आज़ाद हो।" येह फ़रमाने रिसालत सुन कर मुजरिमों की आंखें अश्कबार हो गईं और इन के दिलों की गहराइयों से शुक्रिय्या के जज़्बात आंसूओं की धार बन कर इन के रुख़्सारों पर मचलने लगे और कुफ़्फ़ार की ज़बानों पर لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ के ना'रों से ह़रमे का'बा के दरो दीवार पर हर त़रफ़ अन्वार की बारिश होने लगी। **अल्लाहु** अक्बर ! ऐ अक़्वामे आ़लम की तारीख़ी दास्तानो ! बताओ, क्या दुन्या के किसी फ़ातेह की किताबे ज़िन्दगी में कोई ऐसा ह़सीन और रौशन वरक़ है ? येह नबिय्ये जमालो जलाल का वोह बे मिसाल शाहकार है कि दुन्या के बादशाहों के लिये उस का तसव्वुर भी मुह़ाल है। (सीरते मुस्त़फ़ा, 438, 441, मुलख़्ख़सन व बित्तग़य्युर)

سُبْحٰنَ اللّٰه ! क्या शान है हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ! जिन लोगों ने आप पर ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़े, तब्लीग़े दीन के वक़्त त़रह़ त़रह़ से सताया, ह़त्ता कि आबाई वत़न छोड़ने पर मजबूर किया, इसी पर बस न की बल्कि हिजरत के बा'द भी चैन से न रहने दिया। लेकिन फ़त्ह़े मक्का के दिन जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के जां निसार उन पर ग़ालिब आ गए तो उन से बदला लेने के बजाए नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कमाले ह़िल्म व शफ़्क़त फ़रमाते हुए सब को मुआ़फ़ फ़रमा दिया।

जान के दुश्मन ख़ून के प्यासों को भी शहरे मक्का में
आ़म मुआ़फ़ी तुम ने अ़त़ा की कितना बड़ा एह़सान किया

लिहाज़ा हमें भी सीरते रसूल पर अ़मल करते हुवे बदले की कुदरत के बा वुजूद मुआफ़ कर देना चाहिये क्यूं कि येह बदले से ज़ियादा बेहतर और आख़िरत में अज्रो सवाब का बाइ़स है, चुनान्चे, **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है :

وَ جَزٰٓؤُا سَیِّئَةٍ سَیِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَ اَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۴۰﴾ (پ25،الشوریٰ:40)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बुराई का बदला इसी की बराबर बुराई है तो जिस ने मुआफ़ किया और काम संवारा तो उस का अज्र **अल्लाह** पर है बेशक वोह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को ।

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी में इस की बहुत सी मिसालें मौजूद हैं कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक्लीफ़ पहुंचाने वालों को मुआफ़ फ़रमा दिया करते थे ।

आइये ! अपने किरदार को सीरते रसूल के सांचे में ढालने के लिए आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़िल्मो करम से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद 4 वाक़िआ़त मुलाह़ज़ा कीजिए, चुनान्चे,

﴾1﴿ जान के दुश्मन को मुआफ़ी

एक सफ़र में नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा रहे थे कि ग़ौरस बिन ह़ारिस ने आप को शहीद करने के इरादे से आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तलवार ले कर नियाम से खींच ली, जब आप नींद से बेदार हुवे तो ग़ौरस कहने लगा : ऐ मुह़म्मद ! अब आप को मुझ से कौन बचा सकता है ? आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : “**अल्लाह**”। येह सुनते ही हैबत से तलावर उस के हाथ से गिर पड़ी और

नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तलवार हाथ मुबारक में ले कर फ़रमाया : अब तुझे मेरे हाथ से कौन बचाने वाला है ? ग़ौरस गिड़ गिड़ा कर कहने लगा : आप ही मेरी जान बचाइये ! रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस को छोड़ दिया और मुआ़फ़ फ़रमा दिया । चुनान्चे, ग़ौरस अपनी क़ौम में आ कर कहने लगा कि ऐ लोगो ! मैं ऐसे शख़्स के पास से आया हूं, जो दुन्या के तमाम इन्सानों में सब से बेहतर है । (الشفا، 1/107)

सो बार तेरा देख कर अ़फ़्व और तरह़्हुम   हर बाग़ी व सरकश का सर आख़िर को झुका है

﴾2﴿ गर्दन मुबारक पर रगड़ का निशान

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह चल रहा था और आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक नजरानी चादर ओढ़े हुवे थे, जिस के कनारे मोटे और खुरदरे थे, एक दम एक देहाती ने नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चादर मुबारक को पकड़ कर झटके से खींचा कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक गर्दन पर चादर की कनार से ख़राश आ गई, वोह कहने लगा : **अल्लाह** पाक का जो माल आप के पास है, आप हुक्म दीजिये कि इस में से मुझे कुछ मिल जाए । रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और मुस्कुरा दिये, फिर उसे कुछ माल अ़त़ा फ़रमाने का हुक्म दिया । (بخاری، 2/359، حدیث:3149)

﴾3﴿ जादू करने और ज़हर देने वालों को मुआ़फ़ी

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर लबीद बिन आ'सम ने जादू किया तो आप ने उस का बदला नहीं लिया । नीज़ आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस ग़ैर मुस्लिमा को भी मुआ़फ़ फ़रमा दिया, जिस ने आप को ज़हर दिया था । (المواہب اللدنیہ، 2/91)

﴾4﴿ जिस्मानी नुक़्सान पहुंचाने वाले को दुआ दी

ग़ज़्वए उहुद में नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक दन्दान का कुछ किनारा शहीद और चेहरए अन्वर को ज़ख़्मी कर दिया गया, येह बात सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को बहुत बुरी लगी और अ़र्ज़ किया : आप इन के लिए दुआ़ए ज़रर फ़रमाएं। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं ला'नत करने वाला बना कर नहीं बल्कि दा'वत देने वाला और रह़मत बना कर भेजा गया हूं। اَللّٰھُمَّ اھْدِ قَوْمِیْ فَاِنَّھُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ या'नी ऐ **अल्लाह**! मेरी क़ौम को हिदायत दे, क्यूं कि येह लोग मुझे जानते नहीं। (الشفاء 1/105)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ज़ाती दुश्मनों को मुआ़फ़ी मगर....

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन वाकिआ़त से मा'लूम हुवा कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर एक से शफ़्क़तो मह़ब्बत से पेश आते, कभी अपनी ज़ात के लिये किसी पर गुस्सा न फ़रमाते, मगर जब आप के सामने शरई हुदूद को तोड़ा जाता और अह़कामे इलाही से मुंह मोड़ा जाता तो पेशानिये अक़्दस पर जलाल के आसार नुमायां हो जाते थे, चुनान्चे,

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने कभी भी रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी ज़ात पर किये गए ज़ुल्म का बदला लेते हुवे नहीं देखा, जब तक **अल्लाह** पाक की मुक़र्रर कर्दा हुदूद को न तोड़ा जाए और जब **अल्लाह** पाक की मुक़र्रर कर्दा हुदूद में से किसी ह़द को तोड़ा जाता तो आप शदीद गुस्सा फ़रमाते।

(الشمائل المحمدیۃ، ص198، حدیث:332)

शरई हुदूद तोड़ने पर हुज़ूर का जलाल

कुरैश के ख़ानदान बनी मख़्ज़ूम की एक औ़रत ने चोरी की तो कुरैश सोचो बिचार करने लगे कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस की सिफ़ारिश कौन करे ? बिल आख़िर ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه का इन्तिख़ाब हुवा कि येह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मह़बूब हैं, येह बात कर सकते हैं। ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने जब आप से उस औ़रत की सिफ़ारिश की तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम **अल्लाह** पाक की हुदूद में सिफ़ारिश करते हो ? फिर खड़े हुवे और ख़ुत़्बा दिया : ऐ लोगो ! तुम से पिछले लोग इसी लिये हलाक हुवे कि उन में से कोई साह़िबे मन्सब चोरी करता तो उसे छोड़ दिया जाता और अगर ग़रीब चोरी करता तो उस पर ह़द क़ाइम की जाती। ख़ुदा की क़सम ! अगर फ़ात़िमा बिन्ते मुह़म्मद भी चोरी करती तो मैं उस का (भी) हाथ काट देता। (مسلم، ص716، حدیث:4410)

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेह़द शफ़ीक़ व मेहरबान हैं, अपने दुश्मनों के ज़ुल्मो सितम पर भी अ़फ़्वो दर गुज़र से काम लेते, मगर जब आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने शरीअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की जाती तो चेहरए अन्वर पुर जलाल हो जाता था। लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि किसी को गुनाह में मुब्तला देखें तो मुसल्मान के साथ ख़ैर ख़्वाही और उस की आख़िरत की भलाई की ख़ात़िर शरीअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने पर इस की इस्लाह़ करें, अगर समझाने से फ़ितने का अन्देशा हो तो दिल में बुरा ज़रूर जानें। जब कि ज़ाती मुआ़मलात में ख़िलाफ़े मिज़ाज बातों पर सब्रो तह़म्मुल और अ़फ़्वो दर गुज़र से ही काम लेना चाहिये, कोई कितना ही गुस्सा दिलाए अपनी ज़बान और हाथों को क़ाबू में रखते

हुवे रिज़ाए इलाही की ख़ातिर मुआफ़ कर देना चाहिये। क्यूं कि जब ज़बान बे क़ाबू हो जाती है तो बा'ज़ अवक़ात बने बनाए काम भी बिगाड़ देती है, किसी ने सच कहा कि

है फ़लाह़ व कामरानी नर्मी व आसानी में   हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

याद रखिए ! अगर हम किसी की ग़लती पर रिज़ाए इलाही और अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ इस से इन्तिक़ाम लेना छोड़ दें तो इस से हमारा मुआ़शरा अम्नो सुकून का गहवारा बन सकता है और फ़ितने फ़साद के तमाम नापाक जरासीम ख़ुद ब ख़ुद दम तोड़ जाएंगे। बुर्दबारी व नर्म दिली, **अल्लाह** पाक को पसन्द है, यक़ीनन जिस के पास येह अ़ज़ीम दौलत है वोह बड़ा ही ख़ुश नसीब है, नर्मी ही इन्सान की ज़ीनत है और बा अख़्लाक़ और नर्म ख़ू शख़्स सब को प्यारा लगता है, तुन्द मिज़ाज और सख़्त दिल शख़्स से लोग दूर भागते हैं। नर्मी से मुतअ़ल्लिक़ 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा पढ़िये और इस प्यारी आ़दत को अपनाने की निय्यत कीजिए।

नर्मी से मुतअ़ल्लिक़ 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

《1》 **अल्लाह** पाक रफ़ीक़ है और रिफ़्क़ या'नी नर्मी को पसन्द फ़रमाता है और **अल्लाह** पाक नर्मी की वज्ह से वोह चीजें अ़ता करता है जो सख़्ती या किसी और वज्ह से अ़ता नहीं फ़रमाता। (مسلم، ص1072، حدیث:6601)

《2》 जिस चीज़ में नर्मी होती है तो नर्मी उसे ज़ीनत ही देती है और जिस चीज़ से नर्मी निकाल दी जाती है तो उसे ऐ़बदार कर देती है।

(مسلم، ص1073، حدیث:6602)

《3》 जो नर्मी से मह़रूम रहा, वोह हर भलाई से मह़रूम रहा।

(مسلم، ص1072، حدیث:6598)

﴾4﴿ जिसे नर्मी में से ह़िस्सा दिया गया उसे दुन्या व आख़िरत की अच्छाइयों में से ह़िस्सा दिया गया। (مسند امام احمد،9/504،حدیث:25314)

बना दो सब्रो रिज़ा का पैकर बनूं ख़ुश अख़्लाक़ ऐसा सरवर
रहे सदा नर्म ही त़बीअ़त नबिय्ये रह़मत शफ़ीए़ उम्मत

(वसाइले बख़्शिश, स. 208)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

तौरात शरीफ़ में हुज़ूर की निशानियां

ह़ज़रते ज़ैद बिन सअ़ना رَضِیَ اللہُ عَنْہ जो (इस्लाम लाने से) पहले एक यहूदी आ़लिम थे, इन्हों ने एक बार हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कुछ खजूरें ख़रीदीं। खजूरें देने की मुद्दत में अभी 2 या 3 दिन बाक़ी थे कि उन्हों ने मस्जिद में आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दामन और चादर पकड़ कर निहायत तेज़ नज़रों से आप की त़रफ़ देखते हुवे यूं कहा : "ऐ मुह़म्मद ! अ़ब्दुल मुत्त़लिब की सारी औलाद का येही त़रीक़ा है कि तुम लोग हमेशा लोगों के हुक़ूक़ अदा करने में देर लगाया करते हो और टाल मटोल करना तुम लोगों की आ़दत बन चुकी है।" येह मन्ज़र देख कर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने जलाल में आ कर उस से कहा : "ऐ ख़ुदा के दुश्मन ! क्या तू ख़ुदा के रसूल صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ऐसी गुस्ताख़ी कर रहा है ? ख़ुदा की क़सम ! अगर हुज़ूर के अदब का लिह़ाज़ न होता तो मैं अभी अपनी तलवार से तेरा सर उड़ा देता।" येह सुन कर आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ उ़मर ! तुम क्या कह रहे हो ? तुम्हें तो येह चाहिये था कि मुझे अदाए ह़क़ की तरग़ीब दे कर और इस को नर्मी के साथ तक़ाज़ा करने

की हिदायत कर के हम दोनों की मदद करते। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि ऐ उ़मर ! इस को इस के ह़क़ के बराबर खजूरें दे दो ! और कुछ ज़ियादा भी दे दो। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने जब ह़क़ से ज़ियादा खजूरें दीं तो उन्हों ने कहा : ऐ उ़मर ! मेरे ह़क़ से ज़ियादा क्यूं दे रहे हो ? आप ने फ़रमाया : चूंकि मैं ने टेढ़ी नज़रों से देख कर तुम्हें ख़ौफ़ ज़दा कर दिया था, इस लिये नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुम्हारी दिलजूई के लिए तुम्हारे ह़क़ से कुछ ज़ियादा देने का मुझे हुक्म दिया है। येह सुन कर इन्हों ने कहा : ऐ उ़मर ! क्या तुम मुझे पहचानते हो मैं कौन हूं ? आप ने फ़रमाया : नहीं, कहा : मैं यहूदियों का आ़लिम ज़ैद बिन सअ़ना हूं। फ़ारूक़े आ'ज़म ने फ़रमाया : फिर तुम ने रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ ऐसी गुस्ताख़ी क्यूं की ? जवाब दिया : ऐ उ़मर ! दर अस्ल बात येह है कि मैं ने तौरात शरीफ़ में आख़िरी नबी की जितनी निशानियां पढ़ी थीं इन सब को मैं ने उन की ज़ात में देख लिया था मगर दो निशानियों के बारे में मुझे इम्तिह़ान करना बाक़ी रह गया था। ﴾1﴿ उन की कुव्वते बरदाश्त इन के ग़ज़ब पर ग़ालिब रहेगी और ﴾2﴿ जिस क़दर ज़ियादा उन के साथ जहालत का बरताव किया जाएगा, उसी क़दर उन का ह़िल्म (यानी सब्रो तह़म्मुल) बढ़ता जाएगा। चुनान्चे, मैं ने इस तरकीब से इन दोनों निशानियों को भी इन में देख लिया और मैं गवाही देता हूं कि येह नबिय्ये बर ह़क़ हैं। ऐ उ़मर ! मैं बहुत ही मालदार आदमी हूं, आप गवाह हो जाएं कि मैं ने अपना आधा माल नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत पर सदक़ा कर दिया, फिर येह बारगाहे रिसालत में आए और कलिमा पढ़ कर दामने इस्लाम में आ गए।

(सीरते मुस्त़फ़ा, स. 601-603, मुलख़्ख़सन व मुल्तक़त़न)

سُبْحٰنَ الله **अल्लाह** पाक ने अपने प्यारे और आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को किस क़दर उम्दा अख़्लाक़ का पैकर बनाया कि कोई कितना ही दिल दुखाता, बद तमीज़ी व बद अख़्लाक़ी से पेश आता और हक़ तलब करने में बे अदबी कर जाता मगर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस के साथ हमेशा हिल्म व बुर्दबारी, सब्र और नर्मी को ही इख़्तियार फ़रमाते। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस प्यारी सिफ़त की ता'रीफ़ करते हुवे क़ुरआने पाक में **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया :

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۠ (پارہ:4، آلِ عمران:159)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो कैसी कुछ **अल्लाह** की मेहरबानी है कि ऐ महबूब तुम इन के लिए नर्म दिल हुवे और अगर तुन्द मिज़ाज सख़्त दिल होते तो वोह ज़रूर तुम्हारे गिर्द से परेशान हो जाते।

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सिफ़ात को पहली किताबों में देखा है, आप न तो तंग मिज़ाज हैं और न ही सख़्त दिल, न बाज़ारों में शोर करने वाले और न ही बुराई का बदला बुराई से देने वाले हैं, बल्कि मुआफ़ करने वाले और दर गुज़र फ़रमाने वाले हैं। (تفسیر ابن کثیر، 130/2)

येही वज्ह है कि आप के इन्ही अख़्लाक़े करीमाना की बरकतों से फ़ैज़याब हो कर बे शुमार कुफ़्फ़ार ने इस्लाम क़बूल किया।

दौरे जहालत था हर सू जब कुफ़्र की ज़ुल्म छाई थी
तुम ने हैवानों जैसे लोगों को भी इन्सान किया

(वसाइले बख़्शिश, स. 196)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

बेटी को अज़िय्यत देने वाले को भी मुआफ़ी

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शहज़ादी ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہ عَنْہَا को उन के शौहर अबुल आ़स رَضِیَ اللّٰہ عَنْہ ने ग़ज़्वए बद्र के बा'द मदीनए मुनव्वरा के लिये रवाना किया। जब क़ुरैशे मक्का को उन की रवानगी का इ़ल्म हुवा तो उन्हों ने ह़ज़रते ज़ैनब का पीछा किया ह़त्ता कि मक़ामे ज़ी तुवा में उन्हें पा लिया। हब्बार बिन अस्वद ने ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہ عَنْہَا को नेज़ा मारा जिस की वज्ह से आप ऊंट से गिर गईं और आप का ह़म्ल ज़ाएअ़ हो गया। (तफ़्सीर सिरातुल जिनान, 3/503)

बेटी को इतनी बड़ी अज़िय्यत पहुंचाने वाले शख़्स के साथ नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सुलूक मुलाह़ज़ा हो, चुनान्चे, ह़ज़रते जुबैर बिन मुत़्इ़म رَضِیَ اللّٰہ عَنْہ फ़रमाते हैं : मक़ामे जिइ़राना से वापसी पर हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बैठे थे कि इतने में आप صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरवाज़े से हब्बार बिन अस्वद (जिस ने अभी तक इस्लाम क़बूल न किया था) दाख़िल हुवा (और बैठ गया), सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हब्बार बिन अस्वद (आया है)। इर्शाद फ़रमाया : मैं ने इसे देख लिया है। एक शख़्स उसे मारने के लिए खड़ा हुवा तो आप ने उसे बैठने का इशारा किया। हब्बार ने खड़े हो कर कहा : ऐ **अल्लाह** (पाक) के नबी ! आप पर सलामती हो, मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** पाक के इ़लावा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं। **या रसूलल्लाह !** मैं आप से भाग कर कई शहरों में गया और मैं ने चाहा कि अ़जमी लोगों (यानी ग़ैर अ़रबियों) के मुल्कों में जा कर रहूं,

फिर मुझे आप की नर्म दिली, सिलए रह़मी नीज़ जहालत का बरताव करने वाले से आप का दर गुज़र करना याद आ गया। ऐ **अल्लाह** के नबी ! हम शिर्क में मुब्तला थे फिर **अल्लाह** (पाक) ने आप के वसीले से हमें हिदायत दी और हमें हलाकत से नजात बख़्शी, लिहाज़ा आप मेरी जहालत और मेरी उस बात से जिस की आप तक ख़बर पहुंची है, दर गुज़र फ़रमाएं क्यूं कि मैं अपने बुरे काम का इक़रार और अपने गुनाह का ए'तिराफ़ करता हूं।

रह़ीमो करीम आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जाओ मैं ने तुम्हें मुआ़फ़ कर दिया। **अल्लाह** पाक ने तुम पर एह़सान किया है कि उस ने तुम्हें इस्लाम की हिदायत दे दी और इस्लाम पिछले तमाम गुनाहों को मिटा देता है। (الاصابہ، 6/412، 413)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

क़त्ल का इरादा रखने वाला भी मुसल्मान हो गया

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जब येह ख़बर मिली कि नज्द (मौजूदा रियाज़) के एक मश्हूर बहादुर "दुअ़सूर बिन ह़ारिस मुह़ारिबी" ने मदीने पर ह़म्ला करने के लिये एक लश्कर तय्यार कर लिया है तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चार सौ (400) सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की फ़ौज ले कर मुक़ाबले के लिये रवाना हो गए। दुअ़सूर को जब येह ख़बर मिली कि रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे शह्र में आ गए हैं तो वोह भाग निकला और अपने लश्कर को ले कर पहाड़ों पर चढ़ गया मगर इस की फ़ौज का एक आदमी "ह़ब्बान" गिरिफ़्तार हो गया और बारगाहे रिसालत में आ कर इस्लाम ले आया। इत्तिफ़ाक़ से उस दिन ज़ोरदार

बारिश हो गई। रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक दरख़्त के क़रीब अपने कपड़े सुखाने लगे। पहाड़ की बुलन्दी से ग़ैर मुस्लिमों ने देखा कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अपने अपने कामों में मश्ग़ूल हैं और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अकेले हैं तो उन्होंने दुअ़सूर को नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ह़म्ला करने के लिये उभारा, दुअ़सूर तलवार ले कर مَعَاذَ الله येह कहते हुए नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ बढ़ा कि "अगर मैं मुह़म्मद को क़त्ल न कर सका तो **अल्लाह** मुझे क़त्ल कर दे।" ह़त्ता कि वोह आप के सर मुबारक पर तलवार बुलन्द कर के बोला : अब आप को मुझ से कौन बचाएगा ? आप ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** करीम मुझे तुझ से बचाएगा।" इतना कहना था कि ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام फ़ौरन ज़मीन पर उतरे और दुअ़सूर के सीने पर ऐसा घूंसा मारा कि तलवार उस के हाथ से छूट कर गिर पड़ी। रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़ौरन तलवार उठा ली और फ़रमाया : "अब मुझ से तुझे कौन बचाएगा ?" दुअ़सूर ने कहा : मुझे आप से कोई भी नहीं बचा सकता ! नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उस की बे कसी पर रह़म आ गया, आप ने न सिर्फ़ उस का क़ुसूर मुआ़फ़ फ़रमा दिया बल्कि उस की तलवार भी उसे वापस लौटा दी। दुअ़सूर आप के अख़्लाक़े करीमाना से इस क़दर मुतअस्सिर हुवा कि कलिमा पढ़ कर उसी वक़्त मुसलमान हो गया और अपनी क़ौम में आ कर इस्लाम की दा'वत देने लगा। (المواهب اللدنية، 2/378-381 ملخصاً)

तेरे अख़्लाक़ पर क़ुरबां तेरे औसाफ़ पर वारी
मुसल्मां क्या अ़दू भी तेरा क़ाइल या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 337)

अगले हफ़्ते का रिसाला